सं श्रो.वि./यमुनानगर/352-83/8515.—बूकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैसर्ज एक्सीयन, एस. एण्ड टी. हरियाणा राज्य विजली बोर्ड, यमुनानगर, के श्रीमक श्री नरेश कुमार तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई श्रीक्षोगिक विवाद है;

. भौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, अब, श्रौद्योगिक विवाद श्रिधिनियम, 1947, की घारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इस के द्वारा सरकारी श्रिधिसूचना सं. 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए श्रिधिसूचना सं. 11495-जी-श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त श्रिधिनियम की धारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को दिवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत श्रथवा सम्बन्धित मामला है:---

क्या श्री नरेश कुमार की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं० थ्रो. वि /श्रम्वाला / 16-84/8521. — चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै० दी श्रम्वाला सैन्ट्रल कोग्राप्रेटिव वैंक लि., श्रम्वाला शहर, के श्रमिक श्री मातु राम तथा उसके प्रवन्त्वकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रौद्योगिक विवाद है;

मोर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, भव, भौद्योगिक विवाद अधितियन, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 5415-3-श्रम-68/15254, दिनाँक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए अधिसूचना सं. 11495-जी-श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्मायनिर्णय के लिए निद्धिंद करते हैं जोकि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री मातु राम की सेवाग्रों का समापन न्थायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं श्री वि । प्रम्वातः । 17-84/8527. -- चूंकि राज्यपाल, हरियाणा की राय है कि मैं । दी प्रम्वाला सैन्द्रल की श्राप्रेटिव वैंक लि., श्रम्वाला शहर, के श्रमिक श्री श्रक्तेण दत्त तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके वाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई भोधोगिक विवाद है;

भौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद के न्यायनिर्णय हेतु निदिष्ट करना बांछनीय समझते हैं ;

इस लिए, अब, श्रौद्योगिक विवाद श्रधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपघारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई गिन्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रिधिसूचना सं. 5415-3-अम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए श्रिधिसूचना सं. 11495-जी-अम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त श्रिधिनियम की घारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय, फरोदाबाद, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत द्विया उससे संविद्य त नीचे लिखा मामला न्यायिनणंय के लिए निर्दिष्ट करते हैं जोकि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित मामला है :--

क्या श्री अरुनेश दत्त की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं. भी.वि./ग्रम्बाला/27-83/8533.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल को राय है कि मै० जलूवी कोग्रोपरेटिव केडिट सर्विस सोसाईटी लि., जलूबी, तहसील व जिला ग्रम्बाला, के श्रमिक दल सिंह तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई शौद्योगिक विवाद है;

भीर चूकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते है;

इसलिए, भव, श्रौद्योगिक विवाद भ्रधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी धरिसूचना सं. 5415-3-अम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए अधिसूचना सं. 11495-जी-श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उसत आधिनियम की घारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिनगंब के लिए निर्दिष्ट करते हैं जोकि उनत प्रबन्धकों तया श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित मामला है:——

क्या श्री दल सिंह की सेवाश्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं भी विव / यमुना / 3 48-83/8539. — चूं कि हरियाणा के राज्यपाल, की राय है कि मैं ए वसीयन, पावर हाऊ सु नं 3, हाईडल प्रोजनट डब्ल्यू वाई सी, एच. एस. ई. वी. भूण्डकलां, के श्रमिक श्री काइमीरा सथा उसके प्रयन्तकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई भी बोगिक विवाद है;

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते है;

इसलिए, अब, श्रीद्योगिक विवाद प्रधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा(1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रवास की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी प्रधिसूचना सं. 5415-3-श्रम-68√15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए प्रधिसूचना सं. 11495-जी-श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त प्रधिनियम की धारा 7 के प्रधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादप्रस्त या उससे सुसंगत या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायिनगंथ के लिए निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादप्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रथवा संबंधित मामला है:—

क्या श्री काइमीरा की सेवाम्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत श्रा हकदार है ?

## दिनांक 1 मार्च, 1984

सं. श्रो.वि./एफ.डी./20-84/8730.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं. ग्रेट इण्डियन रोड़ लाईन्स, केवल कालोनी, मथुरा रोड़, फरीदाबाद, के श्रमिक श्री दलीप शर्मा तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामने में कोई भीद्योगिक विवाद है;

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, ग्रव, ग्रीद्यागिक विवाद ग्रधिनियम, 1947 की घारा 10 की उपघारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तिकों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रधिसूचना सं. 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए ग्रधिसूचना सं. 11495-जी-श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त ग्रधिनियम की ग्रारा 7 के श्रवीम गठित श्रम न्यायालयं, फरीदाबाद, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के सिए निर्विष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है, या विवाद से सुसंगत ध्रथवा संबंधित मामला है:——

क्या श्री दलीप शर्मा की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हरुदार है ?

संश्री वि/एफ.डी./2-84/8740.--चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं० रीता इन्डस्ट्रीज एण्ड इकको आटो लि०, राजेन्द्र फार्म, लिंक रोड, फरीदाबाद, के श्रीमक श्री लक्ष्मण तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को त्यायनिर्णय हेतु निविध्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, श्रव, श्रौद्योगिक विवाद श्रधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा श्रदान की गई शिक्तयों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रिष्ठिसूचना सं 5415-3-श्रम-68/15254, दिलांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए श्रिध्सूचना सं 11495-जी.-श्रम-57/11245, दिलांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त धरिक नियम की धारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिनणंयं के लिए निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत श्रथवा सम्बन्धित मामला है :—

क्या श्री लक्ष्मण की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?